ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे — निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 26 अंकः 52 बुलेटिन अवधिः 8–12 जुलाई, 2017 दिनः षुक्रवार दिनाँकः 07 जुलाई, 2017

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **उधम सिंह नगर एवं नैनीताल जिलों के मैदानी क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर				
	08–07–2017	09–07–2017	10–07–2017	11–07–2017	12–07–2017
वर्षा (मिमी0)	15	5	20	10	30
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	30	33	32	33	34
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	25	26	25	24	24
बादल आच्छादन	घने बादल	घने बादल	घने बादल	घने बादल	घने बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	95	95	95	95	95
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	65	65	65	65	65
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	006	008	008	008	010
वायु की दिशा	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व

आगामी 8 से 12 जुलाई तक हल्की से मध्यम वर्षा होने तथा आसमान में घने बादल छाये रहने की सम्भावना है।

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विष्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधषाला (समुद्रतल से ऊँचाई–243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (**30 जून से 06 जुलाई,** 2017 सुबह 8:30 तक) में आसमान में पूर्णतः बादल छाये रहे तथा 84.4 मि0मी0 वर्षा हुई, अधिकतम तापमान 31.0 से 36.0 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 24.0 से 27.4 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 89 से 96 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 67 से 95 प्रतिशत एवं हवा 4.0 से 7.5 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पूर्व–उत्तर–पूर्व व पूर्व–दक्षिण–पूर्व दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

❖ धान में तना वेधक व पत्ति मरोड़क का प्रकोप होने पर क्लोरान्ट्रनिलिप्रोल 0.4 जी को 10000 ग्राम/है0 या फिप्रोनिल 0.3 जीआर 25000 ग्राम/है0 या कारटाप 4 जीआर 18750 ग्राम /है0 की दर से छिड़काव रोपाई से 50 दिन के अन्दर करें।

❖ माह जून में बोई गयी सोयाबीन की फसल में निराई–गुड़ाई कर पौधों का विरलीकरण अवश्य करें।

❖ गन्ने की फसल में जलभराव वाले खेतों में जल निकास की व्यवस्था करें माह के प्रथम सप्ताह में जड़ों पर हल्की मिट्टी चढ़ायें।फसल बढ़वार अच्छी होने पर 5 फीट की ऊंचाई पर बंधाई कर लें।

❖ मक्का की फसल में यथासमय निराई–गुड़ाई एवं सिंचाई करें तथा फसल 2 फीट ऊंचाई की होने पर नत्रजन की टाप ड्रेसिंग करें।

❖ अरहर की देर से पकने वाली प्रजातियों की बुवाई इस माह के प्रथम पखवाड़े में समाप्त कर लें।

❖ धान की रोपाई से पहले उसकी जड़ों को कार्बेन्डाजीम 1 ग्राम/लीटर के घोल में आधे घण्टे तक भिगोने के बाद रोपाई करें।

❖ रोपाई से पूर्व खेत में जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हैक्टेयर की दर से प्रयोग करें।

❖ धान की रोपाई हेतु पंक्ति से पंक्ति की दूरी 20 सेमी0 तथा पौधे से पौधे की दूरी 10 सेमी0 रखें तथा एक स्थान पर 2–3 पौधे लगाने चाहिए, रोपाई 2–3 सेमी0 गहराई से ज्यादा नहीं करनी चाहिए। रोपाई से 10 दिन के अन्दर मरे पौधों की जगह फिर से रोपाई करें।

❖ गन्ने की फसल में तना बेधक कीट के नियंत्रण हेतु बुवाई के 90 दिन बाद अथवा कीट के दिखाई देने पर ट्राईकोग्रामा किलोनिस परजीवी 25–30 ट्राईकोविट कार्ड (50000–60000 अण्डे)/हैक्टर की दर से 10 दिन के अन्तराल पर 8–10 बार प्रयोग करें।

❖ गन्ने के खेत में यदि सूखे पौधे अथवा कंडुवा ग्रसित पौधे दिखाई दे तो उन्हें निकाल कर खेत से बाहर जला दें।

❖ मक्का में जहॉ तना बेधक का प्रकोप होता है। बुवाई के समय कार्बोफयूरॉन 3सी0जी0 33 किग्रा0/है0 की दर से मृदा मे डालें।

❖ गन्ना में काला बग का प्रकोप हो तो क्लारपाइरीफॉस 20 ई0 सी0 के 2.0 ली0 /है0 या फेन्थोएट 50 ई0 सी0 के 1.0 ली0/है0 या क्यूनसलफॉस 25 ई0 सी0 के 2.0 ली0 को 500 ली0 पानी में घोल कर छिड़काव करे।

❖ कीटनाशी का छिड़काव बारिश न होने पर ही करें।

उद्यान प्रबन्धः

❖ वर्षाकाल में भिण्डी की फसल में उतराकीट की बहुत समस्या होती है जो उगते हुए बीजों को काटकर नष्ट कर देता है इसके बचाव के लिए खेत में थीमेट 10 किग्रा/हैक्टेयर अथवा फ्यूराडान 20–25 किग्रा/हैक्टेयर की दर से अवश्य डालें।

❖ वर्षाकाल में 10–12 किग्रा भिण्डी के बीज की आवश्यकता होती है। बोने से पहले बीज का उपचार कवकनाशी दवा से करें बीज बुवाई की दूरी कतार से कतार 60 सेमी तथा पौधे से पौधे की दूरी 30 सेमी रखें तथा शेष पौधों को उखाड़ दें।

❖ भिण्डी की वर्षा कालीन प्रजातियां वर्षा उपहार, पंजाब पद्मिनी, पंजाब–7, पंजाब–1, अरका, अनामिका, अभय, परभनी क्रांति आदि जिसमें पीट शिरा रोधक क्षमता पायी जाती है का चुनाव करें।

❖ कद्दु वर्गीय फसलों की पत्तियो पर अनियमित आकार में पीले धब्बे दिखाई पड़ने पर पत्तियो को उलटकर निरीक्षण करें यदि निचली सतह पर हल्के धूसक रंग की फॅफूदी की बढ़वार दिखाई दे तो नियत्रंण के लिए मेन्कोजेब 2.5 किग्रा0/ली0 की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

❖ मिर्च एवं टमाटर की पत्तियां काले पड़ने और फसल में ऊपर से डन्ठल काले पड़कर सड़ने की समस्या से निदान हेतु कार्बेन्डाजिम 0.1 प्रतिशत की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

❖ टमाटर में फल बेधक का प्रकोप होने पर, क्लोरान्ट्रानिलिप्रोले 18.5 एस0सी0, 150मि0ली0/है0 के छिड़काव के तीन दिन बाद या इन्डोक्साकार्ज 14.5 एस0सी0, 500मि0ली0/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद ही फल का उपयोग करें।

- टमाटर की फसल में सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर सायान्ट्रानिलीप्रोले 10.26 ओ0डी0, 900 मि0ली0/है0 या थियामेथोक्जाम 25 डब्लू0एस0जी0, 200 ग्राम/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद ही फल को खाने हेतु प्रयोग करें।
- बैंगन में तना एवं फल बेधक के नियंत्रण हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एस0जी0 200ग्रा0/है0, साइपरमैथ्रिन 25इसी 200मि0ली0/है0, लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 सी0एस0 300मि0ली0/है0 की दर से अन्तिम छिड़काव के पाँच दिन बाद फल का उपयोग करे।
- मिर्च में थ्रिप्स के नियंत्रण हेतु लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 इसी 300मि0ली0/है0 या फिप्रोनिल 5 एस0सी0 1लीटर/है0 की दर से छिड़काव के सात दिन बाद ही मिर्च का प्रयोग करें।
- मिर्च में माइट के नियंत्रण के लिए डाईफेन्थयुरान 50डब्लू0पी0 600ग्रा0/है0या लैम्डासाइहैलोथ्रिन 5इसी 300मि0ली0/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद फल का प्रयोग करें।

पशुपालन प्रबन्धः

- पशुओ को संक्रामक रोग से बचाने हेतु टीकाकरण करवायें।
- जुलाई एवं अगस्त महीना गाय/भैंसों की ब्याने का समय होता है अतः प्रसव प्रकोष्ठ को साफ–सुथरा करके इस्तेमाल हेतु तैयार रखें।
- प्रसव के तुरन्त बाद नवजात बच्चे की साफ–सफाई कर उसकी नाभी को धागे से बांधकर किसी साफ चाकू या ब्लेड से काटकर उस पर जैन्सन वायलेट पेन्ट अथवा टिंचर आयोडीन लगाना चाहिए।
- मानसून के प्रारम्भ में अचानक तेज घूप व तेज वर्षा से पशुओं को बचायें क्योंकि इसकी वजह से त्वचा में जलन जैसा विकार उत्पन्न हो जाता है।
- इस ऋतुओं में कृमियों का प्रकोप बढ़ जाता है और इससे बचने के लिए कृमिनाशक का उपयोग निकटतम पशु चिकित्सक की सहायता से करें।
- ज्यादा हरे चारे से घोड़ों में केलिक होने का खतरा रहता है अतः इससे बचें।

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विष्वविद्यालय, पन्तनगर